International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 10-09-2020; Accepted: 25-09-2020; Published: 11-10-2020
Volume 2; Issue 4; 2020; Page No. 12-14

हिंदी में बाल-कथा साहित्य की परंपरा

मनोज कुमार गुप्ता
शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

प्रस्तावना

भारत में आरंभिक बाल-कथा साहित्य के रूप में पंचतंत्र, कथासरित्सागर, सिंहासन बत्तीसी, बैताल पच्चीसी, अलिफलैला आदि के किस्से प्रचलित थे। आधुनिक काल में बाल-कथासाहित्य के इस पूरे परिदृश्य में खासा बदलाव आया। अब बाल-कथा साहित्य के कई रूप हो गए जिसमें बाल-उपन्यास, बाल-कहानियाँ, विज्ञान कथाएँ आदि प्रमुख हैं। हिंदी में बाल-उपन्यास लेखन की परंपरा मूलतः अंग्रेजी से आई। 'ट्रेजर आइलैंड', 'रोबिन्सन क्रूसो', 'सिंदबाद जहाजी' आदि अनूदित उपन्यासों ने हिंदी पट्टी के बच्चों को उपन्यास से परिचित कराया। बाल-उपन्यासों का मौलिक लेखन आज़ादी के बाद ही शुरू हो सका। हालांकि प्रेमचंद की 'कुत्ते की कहानी' जिसे हिंदी का पहला बाल-उपन्यास माना जाता है, का प्रकाशन आज़ादी से पहले ही हो गया था।

आज़ादी के बाद कई बाल पत्रिकाओं में बाल-उपन्यास का प्रकाशन शुरू हुआ। 1952 ई. में 'बालसखा' में प्रकाशित भूपनारायण दीक्षित का 'खड़-खड़ देव' और 1957 में 'किशोर' में प्रकाशित अयोध्या प्रसाद झा का 'लाल पुतला' विशेष चर्चित रहा। उन्हीं दिनों 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में धारावाहिक उपन्यास के रूप में प्रकाशित दया शंकर मिश्र दद्दा का 'दीनू बेटा' भी काफी लोकप्रिय हुआ। आगे चलकर 'पराग' ने दो रोचक धारावाहिक उपन्यास प्रकाशित किये- 'बहत्तर साल का बच्चा' (आबिद सुरती), और 'नागराज वासुकी' (देवराज दिनेश) ये दोनों उपन्यास उस दौर के बच्चों के बीच चर्चा के विषय बने।

1978 ई. में मुद्राराक्षस द्वारा लिखित 'चींटीपूरम का भूरेलाल' प्रकाशित हुआ। इसमें यह दिखाया गया है "वन्य जीवों और कीड़े-मकोड़ों का जीवन इतना अनुशासित होता है कि वह मानव समाज के लिए भी प्रेरणा का विषय बन जाता है। इस उपन्यास में आधुनिक जीवन की झांकी चींटी जगत के माध्यम से बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत की गई है।"[1] कांगड़ा घाटी (हिमाचल प्रदेश) के जनजीवन की पृष्ठभूमि पर लिख गया मस्तराम कपूर 'उर्मिल' का उपन्यास 'नीरू और हीरू' पहाड़ी जीवन का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करता है।

वर्तमान समय में बाल-उपन्यास के विषय-वैविध्य में बहुत व्यापकता आई है। बच्चों के बीच उपन्यास की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। कई नये बाल-उपन्यासकार सामने आये है। हाल के दिनों में गुलज़ार ने कई बाल उपन्यास लिखे। उनके द्वारा रचित 'बोसकी' नामक पात्र इतना लोकप्रिय हुआ कि उन्होंने बोसकी को केंद्र में रखकर बाल-उपन्यासों की एक श्रृंखला लिख दी। जिसमें 'बोसकी के कप्तान चाचा', 'बोसकी का कौआनामा', 'बोसकी की गप्पें', 'बोसकी की गिनती', तथा 'बोसकी का पंचतंत्र' प्रमुख हैं। इन उपन्यासों में बोसकी नामक पात्र के इर्द-गिर्द कथानक का तानाबाना बुना गया है। बच्चे अपनी जिंदगी में रोजमर्रा की जिन चुनौतियों का सामना करते हैं, बोसकी के सामने भी वही चुनौतियाँ हैं। यह विशेषता ही बाल-पाठकों को गुलज़ार के इन बाल-उपन्यासों से जोड़ती है।

देवेन्द्र कुमार इस दौर के प्रतिनिधि बाल-उपन्यासकार हैं। 'पेड़ नहीं कट रहे हैं', 'एक छोटी बांसुरी' और 'खिलौने' इनके प्रमुख उपन्यास हैं। ये उपन्यास बेहद भावनात्मक एवं मार्मिक हैं। 'खिलौना'एक ऐसे गरीब बच्चे की दास्तान है, जो खिलौने खेलने की उम्र में खिलौना बेचता है।

'बड़े भाई साहब', और 'डायनासोर की पीठ पर' क्षमा शर्मा के प्रमुख उपन्यास हैं। 'बड़े भाई साहब'में बड़े भाई के रूप में एक ऐसे कथानायक को चित्रित किया गया है जो विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानता है। 'डायनासोर की पीठ पर'एक फंतासी उपन्यास है जो बच्चों को एक नई दुनिया में ले जाता है।

प्रकाश मनु बहुत पहले से हिंदी बाल-साहित्य का सृजन कर रहे हैं। अभी हाल के दिनों में उनके दो उपन्यास- 'एक था ठुनठुनिया' और 'खुक्कन दादा का बचपन' बेहद चर्चित रहा। 'एक था ठुनठुनिया' का ठुनठुनिया एक गरीब लेकिन खुशमिजाज लड़का हैजो बिना स्कूल गए, वक्त और हालात से बहुत कुछ सीखता है। 'खुक्कन दादा का बचपन'एक बुजुर्ग और बच्चों की दोस्ती की बेहद रोचक कहानी है।

हिंदी का बाल साहित्य पर्यावरण को लेकर बेहद गंभीर है। बाल- उपन्यास में यह गंभीरता कथाकार विनायक के यहाँ देखी जा सकती है। 1996 ई. में प्रकाशित उनका उपन्यास 'संत नेवालादास' विकास और पर्यावरण के द्वंद्व को अत्यंत संजीदगी के साथ उजागर करता है। उपन्यास की भूमिका जो काव्यात्मक हो गई है, से विनायक की 'पर्यावरण-दृष्टि' की स्पष्ट झलक मिलती है-

"उसके पगचिन्ह जहाँ-जहाँ पड़ते गए हैं प्रकृति नष्ट होती गई है
अभी यह पृथ्वी पूरी तरह प्राणीविहीन नहीं हुई है, गर्द-गुबार में
पूरी तरह गुम नहीं हो गई है इसका मात्र एक ही कारण है कि अभी
यहाँ कुछेक अंश बाकी हैं जहाँ उसके पग पूरी तरह नहीं पड़े हैं
लेकिन वह तेजी से बढ़ता आ रहा है
अपने पीछे सर्वनाश का अंधड़ छोड़ता हुआ
और शीघ्र ही अपनी धुरी पर घूमते इस नन्हे से गेंद को वह
आँधियों और मरुस्थल से ढंक देगा
अब तो उसके कदम पूरे ब्रहमांड की ओर उठ गए हैं-
'अरे कोई इस सृष्टि का रखवाला है?
जगाता क्यों नहीं आदमी आ रहा है।"[2]

इन दिनों विनायक का एक उपन्यास 'नदिया और जंगल' भी खूब पढ़ा गया। जिसमें जंगली जानवरों के परिवार की अनोखी कहानी है। साथ ही इसमें यह भी दिखाया गया है कि किस तरह इंसान इन जंगल के परिवारों को तबाह कर रहा है। पर्यावरण को लेकर विनायक की जो संवेदना और पीड़ा है वह उनकी खुद की है, कहीं से पढ़कर या सुनकर नहीं बनाई गई है। उन्हीं के शब्दों में "दरअसल मेरे अन्दर की पीड़ा का स्रोत है कहाँ! मैं प्रकृति और पर्यावरण की और क्यों मुड़ा! मेरे पिता और बाबा देहरादून के रहने वाले थे। उस समय देहरादून मनोरम प्रकृति से ढाका था। नन्हा सा शहर चारों और घने जंगलों से घिरा था। मेरी कोठी के बगीचे में रीछ व तेंदुए आ जाते थे। बगीचे के बीच से एक प्राकृतिक सरिता गुजरती थी। उसकी कल-कल ध्वनि आज भी मेरी आत्मा में बसी है... कई दशक बाद, आज़ाद भारत में, एक बार जब मैं वहां गया तो एक शहर पाया, जहाँ कई सिनेमा हॉल थे। मैं उस आघात से आज तक नहीं निकल पाया। यही वेदना बार-बार-फूटकर मेरे अन्दर से बाहर आ जाती है। जंगल की वह महक, वहां के हवा की वह छुअन आज भी मुझे कचोटती है। मेरी कलम जब भी उठती है वह जंगल और जंगली जीवों की वाणी बन जाती है, पर्यावरण का पर्याय हो जाती है। मैं उपदेश देने के लिए नहीं लिखता। मैं बस अपनी संवेदना को अभिव्यक्ति देता हूँ और उन्हें वाणी देता हूँ जो मूक है और जो बस चीख सकते हैं।"[3]

हरिकृष्ण देवसरे का हालिया उपन्यास 'www.घना जंगल.कॉम' जंगल की दुनिया को एक नये तरीके से सामने लाता है, इस दौरान वह पाठकों को ज्ञान-विज्ञान के तमाम अविष्कारों से रू-ब-रू भी कराता है।

इनके आलावा समकालीन बाल-उपन्यासकारों में उषा यादव, हरिपाल त्यागी, अमर गोस्वामी, संजीव जैसवाल और जाकिर अली 'रजनीश' प्रमुख हैं।

इन तमाम बातों के बावजूद हिंदी बाल-उपन्यास अब भी उस मुकाम पर नहीं पंहुचा है, जहाँ इसे पहुँचना चाहिए। आज कई नई चुनौतियां इसके सामने हैं। "वर्तमान दशक में अभिभावकों और माता-पिता के सामने बाल-उपन्यास को लेकर जो एक भयानक समस्या उभरी है, वह है बच्चों को भारतीयता से जोड़ने की। हुआ यह है कि इधर विदेशों से भारी संख्या में बाल-उपन्यासों का आयात किया गया। वे उपन्यास पब्लिक स्कूलों के साथ-साथ अंग्रजी पढ़ने वाले बच्चों में भी बेहद लोकप्रिय हुए। इन उपन्यासों की सरल भाषा, रोमांचक साहसभरी जासूसी कथा ने बाल-पाठकों को बेहद आकृष्ट किया। किंतु जैसा कि स्वाभाविक है, इन उपन्यासों का परिवेश, कथा, आचार-व्यवहार निस्संदेह भारतीयता से भिन्न था।इसलिए बच्चों ने इन रोचक उपन्यासों का आनंद लेने के साथ-साथ अंजाने ही उनके प्रभाव भी ग्रहण किये। धीरे-धीरे वे भारतीयता से कट गए और विदेशी उपन्यासों के प्रभावों को लेकर भारतीय परिवेश से जुड़ने में उन्हें असुविधा हुई। बच्चों की स्थिति का पता जब माता-पिता और अभिभावकों को लगा तब उन्होंने विदेशी उपन्यासों के प्रति बच्चों की ललक पर रोक लगाना शुरू किया। निस्संदेह यह चुनौती हिंदी तथा भारतीय भाषाओँ के लेखकों के सामने है कि वे उतने ही रोचक और रोमांचक उपन्यास प्रस्तुत करें जितने कि अंग्रेजी के उपन्यास होते हैं। इस दिशा में प्रयास शुरू हो गया है और पिछले पांच-सात वर्षों में बड़ी संख्या में रोचक कथानक, अच्छी छपाई तथा आकर्षक पृष्ठ मुखवाले बाल-उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। फिर भी इस दिशा में अभी बहुत सी अपेक्षाएं हैं। हिंदी या किसी भारतीय भाषा के बाल उपन्यास लोकप्रियता की उस उस ऊंचाई को नहीं पहुँच पाए हैं। दोषपूर्ण विक्रय व्यवस्था, सरकार की उपेक्षा और प्रकाशन की कतिपय खामियां ही नहीं, लेखकीय दायित्वबोध में कमी भी इसका एक कारण हो सकता है। इसलिए अच्छे और रोचक बाल-उपन्यासों की रचना एक चुनौती है।"[4]

'कहानी' बाल साहित्य की लोकप्रिय एवं पुरानी विधा है।हिंदी बाल-साहित्य में बाल-कहानी की एक समृद्ध और लम्बी परंपरा रही है।आरंभिक दौर में शिवप्रसाद 'सितारेहिंद', किशोरीलाल गोस्वामी, गिरिजादत्त वाजपेयी आदि लेखकों ने बाल-कहानियों की रचना की। लेकिन सही मायने में बाल-कहानियों के लेखन की शुरुआत प्रेमचंद के आने के बाद ही हुई। 'ईदगाह', 'बड़े भाई साहब', 'ठाकुर का कुआं', 'दो बैलों की कथा', 'प्रेरणा', 'चोरी', 'राजा हरदौल', 'आत्माराम', 'पंचपरमेश्वर', 'परीक्षा' आदि कहानियों के द्वारा प्रेमचंद ने एक प्रतिमान स्थापित किया। गौरतलब है कि लेखक ने कभी नहीं कहा कि ये कहानियां बच्चों की हैं, बल्कि शुरू में तो इन्हें सिर्फ बड़ों ने ही पढ़ा। लेकिन जैसा कि 'गुलीवर की कथाओं', 'रोबिन्सन क्रूसो', 'टॉम सायर' आदि के साथ हुआ कि इनके लेखकों ने इन्हें लिखा तो था बड़ों के लिए लेकिन ये बच्चों के बीच भी लोकप्रिय हुए, बल्कि बच्चों के बीच ज्यादा लोकप्रिय हुए। कुछ यही हाल हुआ प्रेमचंद की उपरोक्त रचनाओं के साथ। प्रेमचंद की कहानियों में समर्पण, वफादारी, धोखा, मेहनत, दोस्ती, दुश्मनी, स्नेह, संबंध, प्रतिशोध जैसी तमाम बातें शामिल हैं, जिनसे आये दिन बचपन को दो-चार होना पड़ता है। बाल मनोवैज्ञानिकता की गहरी समझ रखने वाले इस कहानीकार की एक ख़ास विशेषता यह है कि वक्त के साथ-साथ बाल-पाठकों के बीच इनकी कहानियों का असर और गहरा हुआ है। आलम यह है कि आज भी प्रेमचंद न केवल हिदी पट्टी बल्कि पूरे देश के बच्चों के प्रिय कहानीकारों में शुमार हैं।

प्रेमचंद के समकालीन लेखकों में विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' का नाम प्रमुख है, जिन्होंने बच्चों के भीतर साहस का भाव जगाने के लिए 'पन्ना धाय' नमक कहानी लिखी। उसी दौर में सुदर्शन की कहानी 'हार की जीत' आई। इस कहानी में डाकू खड़गसिंह, अपाहिज के भेष में छल से बाबा भारती का घोड़ा अपने कब्जे में कर लेता है। बाबा भारती ने बस इतना ही कहा कि घोड़ा ले जाओ लेकिन "मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना... लोगों को यदि इस घटना का पता चला तो वे दीन-दुखियों पर विश्वास न करेंगे.[5] बच्चों के मन पर यह कहानी अपना मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालने में समर्थ रही।

आज़ादी के बाद लिखी कुछ प्रमुख बाल-कहानियों में 'खिलौने की कहानी' (डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल), 'चुहिया राजकुमारी' (बालकृष्ण), 'लाल हाथी' (शिवमूर्ति सिंह 'वत्स'), 'धनुष बाण' (मनमोहन सरल) आदि को शामिल किया जा सकता है। उसी दौर में राजेन्द्र शर्मा की 'सतलुज की कहानी' प्रकाशित हुई। इस कहानी की ख़ास बात यह है कि इसमें सतलुज खुद नैरेटर की भूमिका में है। जिसमें वह खुद ही अपने उद्गम से लेकर समुद्र में मिलने तक की दास्तां रोचक ढंग से सुनाती है। इस तरह की कहानियाँ बच्चों के भौगोलिक ज्ञानवर्धन में सहायक साबित हुई।

आगे चलकर बच्चों के भीतर वैज्ञानिक चेतना जगाने के लिए विज्ञान के तथ्यों पर आधारित 'विज्ञान कहानियां' लिखी गई। जिसमें 'नयी परीलोक में' (हरिकृष्ण देवसरे), 'चंदामामा के देश' (संतोष नारायण नोटियाल), 'पानी बोला' (रामचंद्र तिवारी), 'अंतरिक्ष के यात्री' (नरेन्द्र धीर) आदि कहानियाँ प्रमुख रहीं। जब हिंदी में एक तरफ इस तरह की वैज्ञानिक चेतना वाली बाल-कहानियाँ रची जा रही थी, तब दूसरी तरफ ठीक इसके उलट परी कथाओं, राजा-रानी और सामंती मूल्यों की कहानी को विशेष तरजीह दी जा रही थी।"'धर्मयुग' के माध्यम से एक बहस छिड़ी कि क्या राजा-रानी की सामंती मूल्यों वाली कहानियों की सार्थकता आज के बच्चों के लिए है? क्या परीकथाओं जादूगरों और भूत प्रेतों की कहानियां बच्चों को पढ़ाना सार्थक है? इस सबका यह परिणाम हुआ कि आधुनिक बोध वाले

मौलिक बाल-साहित्य रचना को अधिक महत्व मिला।"[6]

हिंदी बाल-कहानी के समकालीन परिदृश्य पर नज़र डालें तो हम पायेंगे कि आज की कहानियाँ पुरानी कहानियों से कई मामलों में अलग हैं। इस अलगाव को कथ्य एवं शिल्प दोनों स्तरों देख सकते हैं। आज के कहानीकार विषय वस्तु को लेकर बेहद सजग हैं। जिसकी बानगी पिछले दशक में प्रकाशित इन कहानी संग्रहों में देखी जा सकती है -

'नंदू भैया की पतंगें', प्रकाश मनु की तेरह कहानियों संग्रह है। सभी कहानियां अलग-अलग विषयों को उठाती है। जिसमें बच्चों के सपने, दोस्ती, तकरार, प्यार शैतानियों को बेहद रोचक शैली में बयां किया गया है। अभी हाल में ही क्षमा शर्मा की 'इक्यावन बाल कहानियां' प्रकाशित हुई। लेखिका ने अपने इस संग्रह में राजा-रानी और परियों जैसे प्रचलित एवं पुराने विषयों को नये कलेवर में प्रस्तुत किया है। साथ ही 'छोटी बहन', 'नया घर', 'शेर का पता' आदि कहानियां नये विषयों पर लिखी गई है। वीरेन्द्र जैन की 'हास्य कथा बतीसी' रोचक कहानियों का संग्रह है।ये कहानियां बच्चों को खूबहंसाने की क्षमता रखती है।इनकी भाषा बेहद जानदार है।'खरबूजे का बदला रंग'कहानी संग्रह के लेखक हरिकृष्ण देवसरे हैं।देवसरे जी हिंदी बाल साहित्य के बड़े रचनाकार थेजिनका पिछले दिनों निधन हो गया।चौदह कहानियों के इस संग्रह में आधुनिक सोच को बच्चों तक पहुचाने की कोशिश की गई है।

हाल के दिनों में कुछ ऐसी बाल-कहानियां सामने आई, जो आज की समस्या से सीधे-सीधे टकराती हैं। आज की एक बड़ी समस्या, 'साम्प्रदायिकता' की समस्या है। जिसमें सिर्फ बड़े ही नहीं बच्चे भी शामिल हैं। आज बच्चों से इन विषयों को लेकर कतराने के बजाय बात करने की जरूरत है। इसके लिए कहानी एक बेहतर जरिया हो सकता है। इस दृष्टि से पिछले दिनों 'चकमक' में प्रकाशित वरुण ग्रोवर की कहानी 'हरिहर विचित्तर' समकालीन बाल साहित्य की एक अहम रचना है, जो दक्षिण एशिया की साम्प्रदायिकता की समस्या को बेहद संवेदनशीलता के साथ उठाती है।

इनके आलावा जाकिर अली रजनीश, रमाशंकर, दिनेश चमोला, उषा यादव आदि प्रमुख समकालीन बाल-कहानीकार है।

संदर्भ सूची

1. हरिकृष्ण देवसरे, स्वातंत्र्योत्तर बाल-उपन्यास, रचना और प्रयोग, सं. हरिकृष्ण देवसरे, बालसाहित्य रचना और समीक्षा, शकुन प्रकाशन, 1998, दिल्ली, पृ.84
2. विनायक, संत नेवालादास, पूर्वोदया प्रकाशन, 1996, दिल्ली, पृ.1
3. विनायक, हम कहाँ हैं!, सं. फरहत परवीन, आजकल (पत्रिका), प्रकाशन विभाग, नवम्बर-2014, दिल्ली, पृ.21-22
4. हरिकृष्ण देवसरे, स्वातंत्र्योत्तर बाल-उपन्यास, रचना और प्रयोग, सं. हरिकृष्ण देवसरे, बालसाहित्य रचना और समीक्षा, शकुन प्रकाशन, 1998, दिल्ली, पृ.85
5. सुदर्शन की कहानी 'हार की जीत', http://www.hindisamay.com/contentDetail.aspx?id=422&pageno=1
6. हरिकृष्ण देवसरे, बालसाहित्य के सरोकार, यश पब्लिकेशन्स, 2008, दिल्ली, पृ.19